वसंत भाग 2

‘मिठाईवाला’

(मॉड्यूल–1/2)

खिलौनेवाला

लेखक का परिचय

‘भगवती प्रसाद वाजपेयी’ का जन्म 11 अक्टूबर, 1899 को कानपुर के मंगलपुर ग्राम में हुआ था। उन्होंने नियमित पढाई मिडिल/कक्षा–8 तक ही की, फिर कई नौकरियां कीं और लेखन जारी रहा। क्रमशः वह संपादक हो गए। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे।

'प्रेमपथ', 'मीठी चुटकी', 'अनाथ पत्नी', 'त्यागमयी', 'दो बहनें', 'मनुष्य और देवता' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। कुल 33 उपन्यास श्री वाजपेयी ने लिखे।

कहानी संग्रहों में प्रमुख हैं– 'मधुपर्क', 'हिलोर', 'खाली बोतल', 'उपहार', 'दीपमालिका' और 'बाती और लौ'। इनके नाटक 'राय पिथौरा' और 'छलना' भी चर्चित रहे।

एक कविता–संग्रह 'ओस की बूंद' भी है। बालोपयोगी साहित्य भी भगवती प्रसाद वाजपेयी जी ने खूब लिखा। उर्मि' और 'आरती' जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी श्री वाजपेयी ने किया। 08 मई, 1973 को ‘भगवती प्रसाद वाजपेयी’ जी का दतिया में निधन हो गया।

सारांश भाग 1

इस कथा में एक फेरीवाले की भावनाओं को बड़े ही मर्मस्पर्शी तरीके से चित्रित किया गया है। वह फेरीवाला पहली बार खिलौने बेचने जाता है और बड़े विचित्र लेकिन मधुर ढंग से गाकर कहता है "बच्चों को बहलाने वाला, खिलौने वाला" उसकी आवाज सुनकर हलचल मच जाती है। छोटे बच्चों की माएँ चिक उठाकर छज्जे से झांकने लगती हैं तो बच्चों का झुंड खिलौने वाले को घेर लेता है। खिलौने वाला वहीँ अपनी पेटी खोलकर बच्चों को खिलौने दिखाने लगता है। बच्चे अपने नन्हे–नन्हे हाथों से खिलौने लेते हैं और तोतली आवाज में दाम पूछते हैं। राय विजय बहादुर के बच्चे चुन्नू मुन्नू भी खिलौने लेकर उछलते–कूदते घर पहुंचे। उसकी माँ रोहिणी ने उससे पूछा कि खिलौने कितने में लिए तो चुन्नू मुन्नू ने बताया कि दो पैसे में।

यह सुनकर रोहिणी को अचरज हुआ कि इतने सस्ते में खिलौने वाला खिलौने कैसे दे गया। बात छोटी–सी थी, आई–गई हो गई।

छह महीने बाद नगर में एक मुरली वाले के आने का समाचार फैला। लोग बातें कर रहे थे कि वह बड़ी अच्छी मुरली बजाता है और केवल दो–दो पैसे में मुरली बेचता भी है। उसे देख कर ऐसा लगता है जैसे वह वही खिलौने वाला है जो पहले आया करता था। मुरली वाले की आवाज भी गलियों में उसी प्रकार सुनाई देने लगी "बच्चों को बहलाने वाला, मुरलिया वाला" । उसकी आवाज रोहिणी ने सुनी तो उसे तुरंत खिलौने वाले की याद आई। चुन्नू मुन्नू पार्क में खेलने गए थे, इसलिए उसने मुरली खरीदने के लिए पति से कहा कि वह मुरली वाले को बुला लाएँ। बच्चों से घिरे हुए मुरली वाले से विजय बाबू ने मुरली का मूल्य पूछा तो उसने कहा कि वह देता तो तीन पैसे में है लेकिन उन्हें दो पैसे में ही दे देगा।

यह सुनकर विजय बाबू मुस्कुरा उठे। उन्होंने कहा "देते तो सबको इसी दाम में हो, लेकिन एहसान मेरे ऊपर लाद रहे हो" । उनकी बात से अप्रतिभ मुरली वाले ने कहा कि इनका असली मूल्य दो पैसा ही है। कहीं और यह इस दाम पर नहीं मिलेंगी। ग्राहकों की आदत होती है दुकानदारों को लुटेरा समझने की। विजय बाबू ने कहा कि उनके पास वक्त नहीं है, वह जल्दी उन्हें दो मुरलियाँ दे दे। मुरली वाले से मुरलियाँ लेकर विजय बाबू भीतर आ गए और वह मुरलीवाला वहीं बैठकर बड़े स्नेह से बच्चों को मुरली देने लगा। रोहिणी बच्चों के साथ उसके स्नेह भरे वार्तालाप को सुनकर समझ गई कि वह एक भला आदमी है और संभवत किसी मजबूरी में यह काम करता है। बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरली वाले की स्नेहसिक्त बातें याद आती रही। फिर समय के साथ यादें भी धुंधली पड़ गई।

धन्यवाद